वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला का पुष्प नं. 246

प्रथमाचार्य
श्री शांतिसागर विधान

-रचयित्री-

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के
'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष' के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280236

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	आषाढ़ सुदी पूर्णिमा	मूल्य
2200 प्रतियाँ	11 जुलाई 2006	10/-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा गुरु आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज कहा करते थे कि जिसने अपने जीवन में श्रवणबेलगोला के भगवान बाहुबली की मूर्ति के दर्शन, शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र की यात्रा तथा चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के दर्शन, ये तीन पुण्यकार्य नहीं किए, उसने अपने जीवन में कुछ भी नहीं किया, ऐसा समझना चाहिए।

वास्तव में पूज्य गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी के मुखारविंद से उन महान आचार्यश्री के गुणों का वर्णन सुन-सुनकर हृदय रोमांच से भर जाता है, हमने भले ही उन आचार्यश्री के दर्शन नहीं किए हैं परन्तु उनकी गुणगाथा को सुनकर एवं पूज्य माताजी के अद्भुत कार्यकलापों को देखकर यह सहज ही अनुमान लग जाता है कि जब उनकी शिष्या आज इतनी गुणवान, चारित्रवान एवं आगमनिष्ठ हैं तो वे गुरु तो वास्तव में बहुत ही महान रहे होंगे!

पूज्य माताजी समय-समय पर आचार्यश्री के गुणानुवादरूप कुछ न कुछ लघु अथवा वृहत् साहित्य लिखकर समाज को प्रदान करती रहती हैं, इसी श्रृँखला में उन्होंने यह "आचार्य श्रीशांतिसागर विधान" लिखकर प्रदान किया है, इसमें २१६ गुणों के माध्यम से आचार्यश्री की पूजा-अर्चना की गई है।

गुरूणांगुरु की भक्ति में पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखा गया यह विधान आप सभी के जीवन में मंगलकारी हो तथा इस विधान का आयोजन करके आप सभी अपने ज्ञान एवं चारित्र को वृद्धिंगत करने की प्रेरणा प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में श्री नाभिकुमार जैन एवं मानव जैन (जैन बुक डिपो-दिल्ली) का सौजन्य प्राप्त हुआ है, एतदर्थ संस्थान उनके प्रति आभार प्रगट करता है।

—सम्पादक

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज जैसे उत्तुंग एवं गंभीर व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में निबद्ध करना उसी प्रकार अत्यन्त कठिन है, जिस प्रकार हिमालय पर्वत की ऊँचाई, नील नदी की लम्बाई और प्रशान्त महासागर की गहराई का अनुमान लगाना कठिन होता है। बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य के रूप में जैन समाज ने जिस सूर्य का प्रकाश प्राप्त किया, उसने सम्पूर्ण धरा का अन्धकार समाप्त कर एक बार फिर से तीर्थंकर महावीर का युग स्मरण कराया था।

दक्षिण भारत में महाराष्ट्र प्रान्त के येळगुळ (जि.-कोल्हापुर) में श्री भीमगौंडा और सत्यवती से जन्मे सातगौंडा ने शांतिसागर बनकर दक्षिण से उत्तर तक पूरे देश में मुनिधर्म और श्रावकधर्म का प्रचार-प्रसार किया जिसके फलस्वरूप वर्तमान में लगभग ग्यारह सौ साधु-साध्वियों के भ्रमण से प्राणीमात्र को सदाचार एवं मानवता का संदेश प्राप्त हुआ है। उन आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के साक्षात् दर्शन एवं उद्बोधन प्राप्त करने वाली वरिष्ठतम आर्यिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जब आचार्यश्री के सारगर्भित संस्मरण सुनाती हैं तो उनके हृदय का समर्पण एवं गुरुभक्ति का संगम दृष्टव्य होता है।

प्रस्तुत पुस्तक "प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर विधान" में माताजी ने पूज्य आचार्यश्री के गुणों का वर्णन करते हुए अर्घ्य के मंत्रों में भी जो भाव भरे हैं वे प्रत्येक गुरुभक्त के लिए भक्ति का स्रोत प्रवाहित करने में निमित्तभूत हैं। आचार्य महाराज की १३१वीं जन्मजयंती महोत्सव के प्रसंग में रचित इस विधान को सर्वप्रथम आषाढ़ कृ. षष्ठी (आचार्यश्री की जन्मतिथि) ८ जून २००४ को भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में आचार्यश्री के चरण स्थापित कर उनके समक्ष सभी ने विधान सम्पन्न किया पुनः ९ जून २००४ को भगवान महावीर की निर्वाणभूमि पावापुरी सिद्धक्षेत्र पर विराजमान श्रीशांतिसागर महाराज की प्रतिमा के समक्ष विधान सम्पन्न करवाया।

इस विधान में कुल २१६ अर्घ्य हैं। जिसमें ८ वलयों में सम्यग्दर्शन के १० भेद, सम्यग्दर्शन के २५ दोष रहित के २५ गुण, सम्यग्ज्ञान के ८ भेद, साधु के २८ मूलगुण, उपाध्याय के २५, आचार्य के ३६, २२ परीषहजय के २२ भेद एवं ५७ आस्रवनिरोध तथा ५ विशेष गुण (आतापन, अभ्रावकाश और वृक्षमूल में ३ योग, १८ हजार शील के तथा ८४ लाख उत्तरगुण के) सहित ६२ अर्घ्य, इस प्रकार १०+२५+८+२८+२५+३६+२२+६२=कुल २१६ अर्घ्य हैं। प्रत्येक वलय में अर्घ्य मंत्रों के पश्चात् १-१ पूर्णार्घ्य के पद्य हैं जो आचार्यश्री के गुणों का सार अपने में समेटे हुए हैं। पूजन की प्रारंभिक भूमिका वंदना में पूज्य माताजी ने आचार्यदेव का जन्म से लेकर सल्लेखनापर्यन्त जीवनवृत्त दिया है तथा जयमाला में उनके महिमामयी जीवन का वर्णन करते हुए उनके द्वारा किये गये व्रत, तप, स्वाध्याय एवं प्रभावनात्मक कार्यों का उल्लेख करते हुए मानों सचित्र झाँकी ही प्रस्तुत कर दी है।

इस प्रकार संयम वर्ष की एक उपलब्धि के रूप में यह गुरूणांगुरू के प्रति रचा गया पूजन विधान है, जो उनके गुणानुरूप पूर्णतया समुचित प्रतीत होता है। यह विधान पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती वर्ष के अन्तर्गत प्रकाशित हो रहा है। विज्ञजन इस कृति से गुरुओं के गुणग्रहण का भाव रखें और आचार्यश्री की परोक्ष भक्ति करते हुए अपने जीवन को सार्थक करें, यही मंगल कामना है।

❖❖❖❖❖❖

बीसवीं शताब्दी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

'गुरु के बिना जीवन शुरू नहीं' यह सूक्ति सर्व मान्य तथा सर्व विदित है। लोक व्यवहार में प्रथम गुरु माता होती है, जो जन्म देने के साथ ही बालक को लौकिक क्रियाएं सिखाना प्रारंभ कर देती है। दूसरा नंबर आता है पिता का। तीसरे नम्बर पर विद्यालय में ज्ञान देने वाले अध्यापक का आता है, जो अक्षर ज्ञान से लेकर समस्त विषयों का बोध कराता है। चौथे गुरु के रूप में समाज के व्यक्ति आते हैं जो व्यक्ति को सामाजिक व्यवस्थाओं से अवगत कराते हैं। ये सब सांसारिक गुरु हैं। इन सबसे हटकर पाँचवें गुरु धर्मगुरु होते हैं, जो प्राणी को मोक्षमार्ग पर चलना सिखाते हैं।

धर्मगुरु सबसे महान होते हैं। संपूर्ण आरंभ-परिग्रह के त्यागी, नग्न दिगम्बर मुनि ही सच्चे गुरु होते हैं, जो नौका के समान होते हैं। उन्हीं के लिए कहा है-"आप तिरें पर तारहीं ऐसे श्री मुनिराज"। ऐसे गुरु युग की आदि से होते आये हैं तथा इस पंचम काल के अंत तक रहेंगे। जब गुरु का अभाव हो जावेगा, तब धर्म का भी अभाव हो जावेगा। पूर्व काल में भी जब-जब गुरुओं का अभाव हुआ, तब-तब धर्मतीर्थ का व्युच्छेद हुआ।

बीसवीं शताब्दी में चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज धर्मसूर्य के रूप में उदित हुए। उन्होंने स्वयं विशुद्ध मुनिचर्या का दृढ़ता से (आगम के परिप्रेक्ष्य में) पालन किया तथा अनेकों श्रावक-श्राविकाओं को संयम के, त्याग के मार्ग में आरूढ़ किया। त्याग और संयम के प्रति जो भय का भूत लोगों के हृदय में व्याप्त था, उसे भगाया। उन्होंने अपने अंतिम समय में भी यही कहा कि-"बाबा नो भिऊ नका, संयम धारण करा" अर्थात् भाइयों! डरो मत, संयम धारण करो।

उनकी प्रेरणा से अनेकों श्रावक-श्राविकाओं ने मुनि-आर्यिका, क्षुल्लक-क्षुल्लिका की दीक्षा धारण कर मोक्षमार्ग को प्रशस्त किया। उनके द्वारा लगाये गये संयम के बगीचे में आज ११०० पिच्छीधारी साधु-साध्वी सुरभित पुष्प के रूप में लहलहा रहे हैं।

उन गुरुणांगुरु चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम शिष्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज की शिष्या गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने गुरु भक्ति से ओतप्रोत होकर 'प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर विधान' लिखकर श्रावक-श्राविकाओं को गुरुभक्ति में निमग्न होने का पुण्य अवसर प्रदान किया है।

बीसवीं शताब्दी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती

श्री शांतिसागर महाराज का संक्षिप्त परिचय

प्रस्तुति - गणिनी ज्ञानमती

स्वस्ति श्री मूलसंघ में कुन्दकुन्दाम्नाय, सरस्वती गच्छ, बलात्कारगण में बीसवीं सदी में प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज हुए हैं।

जन्मतिथि : आषाढ़ वदी ६, जून १८७२
जन्मस्थान : येळगुळ (जिला-कोल्हापुर) महाराष्ट्र
जन्म नाम : सातगौंडा
क्षुल्लक दीक्षा : ज्येष्ठ शु. १३, सन् १९१४
ग्राम : उत्तूर (जिला-कोल्हापुर) महाराष्ट्र
क्षुल्लक दीक्षा गुरु : १०८ मुनि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज
ऐलक दीक्षा : सन् १९१७ गिरनार क्षेत्र
मुनि दीक्षा : फाल्गुन शु. १४, सन् १९२०
ग्राम : यरनाल (जिला-बेलगांव) कर्नाटक
दीक्षा गुरु : १०८ मुनि श्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज
आचार्य पद : सन् १९२४, समडोली (जिला-सांगली) महाराष्ट्र
द्वारा : चतुर्विध संघ
चारित्रचक्रवर्ती पद : सन् १९३७, गजपंथा सिद्धक्षेत्र (महाराष्ट्र)
समाधिमरण : द्वि. भाद्रपद शु. २, सन् १९५५, कुंथलगिरि (महाराष्ट्र)

आचार्यदेव ने अनेक मुनि, आर्यिका आदि दीक्षाएँ दीं एवं उनके द्वारा अनेक तीर्थों पर जिनप्रतिमाओं की स्थापना, षट्खण्डागम ग्रंथ को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण कराना, अनेक जैन ग्रंथ प्रकाशित कराना आदि बहुविध धर्मप्रभावना के कार्य किये गये हैं। सदी के ऐसे प्रथमाचार्य के श्री चरणों में शत-शत नमन।

उन आचार्यश्री के मैंने क्षुल्लिका अवस्था में (सन् १९५४-५५ में) तीन बार दर्शन किए और उनकी सल्लेखना देखी तथा उन्हीं की प्रेरणा एवं आदेश से उनके पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से मैंने आर्यिका दीक्षा प्राप्त की है।

विधान की रचयित्री

आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का

संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान : टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि : आसोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा) वि. सं. १९९१(सन् १९३४)
गृहस्थ का नाम : कु. मैना
माता-पिता : श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं गृहत्याग : ई. सन् १९५२ में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।
क्षुल्लिका दीक्षा : चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में
आर्यिका दीक्षा : वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्यश्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व : * अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं २५० विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। * सन् १९९५ में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा : * हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, मांगीतुंगी में १०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा का निर्माण।

महोत्सव प्रेरणा : * पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ।

शैक्षणिक प्रेरणा : * 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा : * जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (१९८२ से १९८५), समवसरण श्रीविहार (१९९८ से २००२), महावीर ज्योति (२००३-२००४) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर विधान

—सिद्ध वंदना—

अट्ठविहकम्ममुक्के, अट्ठगुणड्ढे अणोवमे सिद्धे।
अट्ठमपुढविणिविट्ठे, णिट्ठियकज्जे य वंदिमो णिच्चं ।।१।।

हिंदी पद्य—शंभु छन्द

श्रीसिद्धचक्र सब आठ कर्म-विरहित औ आठ गुणों युत हैं।
अनुपम हैं सब कार्य पूर्ण कर, अष्टम पृथ्वी पर स्थित हैं।।
ऐसे कृतकृत्य सिद्धगण का, हम नितप्रति वंदन करते हैं।
मन वचन काय की शुद्धी से, शिरसा अभिनंदन करते हैं ।।१।

पुष्पांजलिः।

—सरस्वती वंदना—

सिद्धवरसासणाणं, सिद्धाणं कम्मचक्कमुक्काणं।
काऊण णमुक्कारं, भत्तीए णमामि अंगाइं।।१।।

—हिन्दी पद्य—

जिनका वरशासन जग प्रसिद्ध, जो कर्मचक्र से रहित सिद्ध।
उनको कर नमस्कार भक्त्या, द्वादश अंगों को नमूँ नित्य।।१।।

पुष्पांजलिः।

—आचार्यवंदना (आचार्यभक्ति)—

देसकुलजाइसुद्धा, विसुद्धमणवयणकायसंजुत्ता।
तुम्हं पायपयोरुह - मिह मंगल मत्थु मे णिच्चं।।१।।

सगपरसमयविदण्हू, आगमहेदूहिं चावि जाणित्ता।
सुसमत्था जिणवयणे, विणये सत्ताणुरूवेण।।२।।

बालगुरुबुड्ढसेहे, गिलाण-थेरे य खमणसंजुत्ता।
वट्टावयगा अण्णे, दुस्सीले चावि जाणित्ता।।३।।

वयसमिदिगुत्तिजुत्ता, मुत्तिपहे ठाविया पुणो अण्णे।
अज्झावयगुणणिलये, साहुगुणेणावि संजुत्ता।।४।।

उत्तम खमाए पुढवी, पसण्णभावेण अच्छजलसरिसा।
कम्मिंधणदहणादो, अगणीवाऊ असंगादो।।५।।

गयणमिव णिरुवलेवा, अक्खोहा सायरुव्व मुणिवसहा।
एरिसगुणणिलयाणं, पायं पणमामि सुद्धमणो।।६।।

संसारकाणणे पुण, बंभममाणेहिं भव्वजीवेहिं।
णिव्वाणस्स हु मग्गो, लद्धो तुम्हं पसाएण।।७।।

अविसुद्धलेस्सरहिया, विसुद्धलेस्साहि परिणदा सुद्धा।
रुद्दट्टे पुण चत्ता, धम्मे सुक्के य संजुत्ता।।८।।

उग्गह-ईहा-वाया-धारणगुणसंपदेहिं संजुत्ता।
सुत्तत्थ भावणाए, भावियमाणेहिं वंदामि।।९।।

तुम्हं गुणगणसंथुदि, अजाणमाणेण जो मया वुत्तो।
देउ मम बोहिलाहं, गुरुभत्तिजुदत्थओ णिच्चं।।१०।।

—अंचलिका—

इच्छामि भंते! आइरियभत्तिकाउसग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण-सम्मचारित्तजुत्ताणं पंचविहाचाराणं आइरियाणं आयारादि-सुदणाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं तिरयणगुणपालणरयाणं सव्वसाहूणं सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

आचार्य भक्ति

—हिन्दी पद्यानुवाद (शंभु छंद)—

जो देश जाति कुल शुद्ध मनो-वच काय शुद्धि से संयुत हों।
उन पादसरोरुह सदा हमें, इस जग में सब मंगलप्रद हों।।१।।

जो स्वपर समय ज्ञाता आगम, हेतू से सब कुछ भी जानें।
जिनवचन कथन में पूर्ण कुशल, जन के अनुसार विनय ठानें।।२।।

बालक गुरु वृद्ध शैक्ष रोगी, स्थविर तथा उपवास सहित।
उनके पालक दु:शील अन्य मुनि, के भी सत्पथ दर्शक यति।।३।।

व्रत समिति गुप्तियुत स्वयं पुन:, पर को शिवपथ में प्रवृत्त करें।
अध्यापक गुण के निलय साधु, गुण से भी युत आचार्य खरे।।४।।

पृथ्वीसम उत्तम क्षमा स्वच्छ, जल सम प्रसन्न भावों युत हैं।
कर्मेन्धन दहने में अग्नी, नि:संग वायु सम सूरी हैं।।५।।

आकाश सदृश मुनि लेपरहित, सागरसम क्षोभरहित मुनिवर।
इन गुण के आलय के पदयुग, मैं शुद्धमना प्रणमूँ रुचिधर।।६।।

भववन में जो भी भव्यजीव, भ्रमते हैं वे निर्वाण मार्ग।
तुम पद प्रसाद से प्राप्त किया, हे गुरुवर मैं तुम नमूँ पाद।।७।।

जो कृष्ण नील कापोत रहित, शुभलेश्या से परिणत विशुद्ध।
पुन आर्तरौद्र दुर्ध्यान मुक्त, औ धर्म शुक्ल दो ध्यान युक्त।।८।।

जो अवग्रह ईहा अवाय औ, धारण गुण संपति से संयुत।
सूत्रार्थ भावना भाते नित, ऐसे सूरी को वंदूं नित।।९।।

हे गुरुवर!तुम गुणगण संस्तुति, मैं की नहिं गुण का ज्ञान मुझे।
केवल मुझ भक्तीवश ही नित, तुम देवो बोधी लाभ मुझे।।१०।।

अंचलिका (चौबोल छंद)

हे भगवन् ! आचार्य भक्ति का, कायोत्सर्ग किया रुचि से।
उसके आलोचन करने की, इच्छा करता हूँ मुद से।।१।।

सम्यग्ज्ञान दरश चारितयुत, पंचाचार सहित आचार्य।
आचारांग आदि श्रुतज्ञानी, उपाध्याय उपदेशकवर्य।।२।।

रत्नत्रय गुणपालन में रत, सर्व साधु का मैं हर्षित।
अर्चन पूजन वंदन करता, नमस्कार करता हूँ नित।।३।।

दु:खों का क्षय कर्मों का क्षय, होवे बोधि लाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुणसंपद् होवे।।४।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

श्री शांतिसागर स्तुति:

—उपजाति छन्द—

सुरत्नत्रयै: सद्व्रतैर्भ्राजमान:। चतु:संघनाथो गणीन्द्रो मुनीन्द्र:।।
महा-मोह-मल्लैक-जेता यतीन्द्र:। स्तुवे तं सुचारित्रचक्रीशसूरिम्।।१।

भवव्याधिनाशाय दिग्वस्त्रधारी। भवाब्धे: तितीर्षु: जगद्दु:खहारी।।
भवातंकविच्छित्तयेहं श्रितस्वां। स्तुवे शांतिसिंधुं महाचार्यवर्यं।।२।।

महाग्रंथराजं सुषट्खण्डशास्त्रं।सुत्ताग्रस्य पत्रे समुत्कीर्णमेव।।
अहो! त्वत्प्रसादात् महाकार्यमेतत्।प्रजातं सुपूर्णं चिरस्थायि भूयात् ।।३।।

जिनानां सुमूर्त्ती: प्रतिष्ठाप्य भक्त्या।त्वयानेकतीर्थं कृतं भारतेस्मिन् ।।
अनेके सुशिष्या: प्रसिद्धास्तवेह।स्तुवे वीरसिंधुं महाचार्यवर्यं।।४।।

महासाधवोऽप्यार्यिका: क्षुल्लकाद्या:। प्रसादात् हि ते श्रावकाद्याश्च जाता:।।
सुनक्षत्रवृंदैर्युतश्चंद्रमा: खे।सुसंघैर्युत: शांतिसूरि: स्तुवे त्वां।।५।।

महाकल्पवृक्षं महाचार्यरत्नं। कृपासागरं शांतिसज्ज्ञानमूर्तिम्।।
गभीरं प्रसन्नं महाधीरवीरं। महातीर्थभक्तं सदा त्वां प्रवन्दे।।६।।

—पृथ्वी छंद—

नमोऽस्तु मुनिचंद्र! ते भविककैरवाल्हादकृत् ।
नमोऽस्तु मुनिसूर्य! ते जनमनोऽन्धकारांतकृत्।।
नमोऽस्तु गुरुवर्य! ते सकलभव्य-चिंतामणे!
जयेति जय सूरिवर्य! भुवि शांतिसिंधो! सदा।।७।।

—अनुष्टुप् छन्द—

श्रीशांतिसागराचार्यं, वंदे भक्त्या पुन: पुन:।
बोधिर्ज्ञानमती सिद्धि-र्भूयात् मे पूर्ण शांतिदा।।८।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

❖❖❖❖❖❖

आचार्य श्री शांतिसागर वंदना

दोहा — शांतिसागराचार्य को, नमूँ नमूँ शत बार।
सम्यक् चारित प्राप्त हो, मिले स्वात्मनिधि सार।।१।।

—शंभु छंद—

दक्षिण भारत में भोजग्राम के, निकट येळगुळ ग्राम प्रथित।
पाटील भीमगौंडा उन भार्या-सत्यवती पतिव्रता सिद्ध।।
ईस्वी सन् अठरह सौ बाहत्तर, वदि अषाढ़ षष्ठी तिथि थी।
बालक ने जन्म लिया उस नाम-सातगोंडा था रखा तभी।।२।।

बचपन यौवन था धर्ममयी, वैराग्यभाव वृद्धिंगत थे।
उन्नीस शतक अठरह सन् में, सुदि ज्येष्ठ मास तेरस तिथि के।।
देवेन्द्रकीर्ति मुनि से उत्तूर-ग्राम में क्षुल्लक दीक्षा ली।
उन्नीस शतक बीस फाल्गुन सुदि-चौदस में मुनि दीक्षा ली।।३।।
देवेन्द्रकीर्ति गुरु से दीक्षित, मुनिराज दिगम्बर मान्य हुए।
समडोली पंचकल्याणक में, आचार्य सर्व प्राधान्य हुए।।
उन्निस सौ चौबिस ईस्वी सन्, चउविधसंघ के मुनिनाथ बने।
आगम अनुकूल विहित चर्या, कलियुग में भी शिवमार्ग बने।।४।।

ईस्वी सन् उन्निस सौ सैंतीस, गजपंथा सिद्धक्षेत्र सुंदर।
चारित्र चक्रवर्ती पद से, भूषित सब जग पूजित गुरुवर।।
पूरे भारत में भ्रमण किया, सब जिन तीर्थों की यात्रा की।
मुनि दीक्षा क्षुल्लक ऐलक औ, आर्यिका क्षुल्लिका दीक्षा दी।।५।।

शिष्यों को दीक्षा शिक्षा दे, मुनि परंपरा अक्षुण्ण किया।
ऐसे गुरुवर की शरणा ले, मैंने भी संयम लब्धि लिया।।
इस समय चतुर्विध संघ सर्व, इन गुरुवर तरु के फूल व फल।
संयमपथ निराबाध दिखता, इन गुरु की कृपादृष्टि का फल।।६।।

कुलभूषण देशभूषण प्रतिमा, कुंथलगिरि पर स्थापित कीं।
श्री सीमंधर आदिक प्रतिमा, दहिगांव क्षेत्र में स्थापित की।।
आचार्य प्रेरणा पा करके, कुंभोज आदि बहु तीर्थ बने।
बहु पंचकल्याण प्रतिष्ठाएं, बहु धर्मप्रभावक क्षेत्र बने।।७।।

षट्खंडागम धवलादि ग्रन्थ, श्रुतभक्ती से छपवाये हैं।
तांबे पर भी उत्कीर्ण करा, स्थायी ग्रंथ बनाये हैं।।
जिनदेवों की प्रतिमाओं की, अतिशायि प्रतिष्ठा करवायी।
जिन आगम को छपवा करके, जिन आगम रक्षा करवायी।।८।।

कुलभूषण देशभूषण मुनि ने, जहाँ पर निज आत्मा सिद्ध किया।
वहाँ पर ही प्रत्याख्यान मरण-विधि से तुम सल्लेखना लिया।।
ईस्वी सन् उन्निस सौ पचपन, भादों सुदि दूज तिथी आई।
'सिद्धाय नमः' जपते जपते, गुरुवर ने देवगती पाई।।९।।

हैं देव-शास्त्र-गुरु रत्न तीन, रत्नत्रय को देने वाले।
इनके सर्जक इनके वर्द्धक, इनकी भक्ती करने वाले।।
हे शांतिसागराचार्यप्रवर ! चारित्रचक्रवर्ती गुरुवर।
मैं भक्ति करूँ बस शक्ती दो, भवसागर पार करूँ सत्त्वर।।१०।।

अथ गुरुपूजाविधानप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

❖❖❖❖❖❖

श्री शांतिसागराचार्य पूजा

—स्थापना—

तर्ज–मेरा नम्र प्रणाम है.....

वंदन शत शत बार है,

शांतिसागराचार्यवर्य को, वंदन शत शत बार है।
जिनकी चरण शरण लेने से, होते भवदधि पार हैं।।
शांतिसागराचार्यवर्य को.....।।
द्विविध रत्नत्रय धारण करके, वेष दिगंबर धारा था।
पिच्छि कमंडलु मात्र परिग्रह-धरा मोह को मारा था।।
विविध तपश्चर्या कर करके, भरा सुयश भंडार है।
शांतिसागराचार्यवर्य को, वंदन शत शत बार है।।१।।
आह्वानन स्थापन करके, गुरुवर का हम यजन करें।
हृदय कमल में आप विराजो, मोह तिमिर का हनन करें।।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक हम, करें भक्ति साकार हैं।
शांतिसागराचार्यवर्य को, वंदन शत शत बार है।।२।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिन्! श्री शांतिसागराचार्यवर्य! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिन्! श्री शांतिसागराचार्यवर्य! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिन्! श्री शांतिसागराचार्यवर्य! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अथ अष्टक (चाल नंदीश्वर पूजा) —

सरयूनदि को जलस्वच्छ, कंचन भृंग भरूँ।
त्रयधारा देते चर्ण, भव भव त्रास हरूँ।।
श्री शांतिसागराचार्य, पूजूँ भक्ती से।
चारित्रलब्धि को पाय, छूटूँ भवदुख से।।१।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन गंध, गुरु के चरण जजूँ।
पाऊं निज अनुभव गंध, सूरी शरण भजूँ।।श्री....।।२।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अति धवल अखंड, धोकर थाल भरूँ।
होवे मुझ ज्ञान अमंद, तुम ढिग पुँज धरूँ।।श्री.....।।३।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वकुलादि सुगंधित पुष्प, लाऊँ चुन चुन के।
पाऊँ निज समरस सौख्य, गुरु चरणों धरके।।श्री.....।।४।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू है मोतीचूर, अर्पूं तुम सन्मुख।
हो क्षुधा वेदनी दूर, पाऊँ आतम सुख।।श्री.....।।५।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रजाल, आरति करते ही।
नशे मोहतिमिर का जाल, ज्योती प्रगटे ही।।श्री.....।।६।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध सुगंधित धूप, अग्नी में खेऊँ।
उड़ जावे चहुँ दिश धूम्र, तुम पद को सेवूँ।।श्री.....।।७।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव बादाम, फल से यजन करूँ।
हो निजपद में विश्राम, भव भव भ्रमण हरूँ।।श्री.....।।८।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक अर्घ्य बनाय, रत्न मिलाऊँ मैं।
गुरुवर के चरण चढ़ाय, गुणमणि पाऊँ मैं।।श्री.....।।९।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

—स्रग्विणी छंद—

नीर गंगानदी का भरा भृंग में।
आपके पाद में तीन धारा करूँ।।
संघ में शांति हो सर्व बाधा टलें।
धर्म पीयूष मिल जाय गुरु भक्ति से।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

मल्लिका केवड़ा पुष्प सुरभित लिये।
आपके पाद पंकज चढ़ाऊँ अबे।।

सौख्य भंडार पूरो मिटें व्याधियां।
रत्नत्रय निधि मिले आश पूरो यही।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य (२१६ अर्घ्य)

सम्यग्दर्शन के १० अर्घ्य

—दोहा—

मोक्षमार्ग का मूल है, सम्यग्दर्शन रत्न।
पुष्पांजलि से पूजते, पाऊँ तीनों रत्न।।१।।

अथ मंडलस्योपरि प्रथमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं दर्शनमोहोपशांते ग्रन्थश्रवणमंतरेण केवलं वीतरागजिनेंद्रदेवाज्ञया तत्त्वश्रद्धानकरणाय आज्ञासम्यक्त्वगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थदिगम्बरमार्ग एव मोक्षमार्ग इति श्रद्धानसमन्वित-मार्गसम्यग्दर्शनमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

ॐ ह्रीं त्रिषष्टिशलाकापुरुषपुराणोपदेशश्रद्धानसमन्वित-उपदेश-सम्यग्दर्शनमंडिताय श्री शांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

ॐ ह्रीं मुनियोग्यसकलचारित्रसूचकाचारसूत्रश्रवणोत्पन्नश्रद्धानस्वरूप-सूत्रसम्यग्दर्शनसमन्विताय श्री शांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

ॐ ह्रीं जीवादिपदार्थसार्थ-गणितादिविषयकदुर्लभज्ञानेषु कैश्चिद्बीजपदैः तत्त्वश्रद्धानस्वरूपबीजसम्यग्दर्शनमंडिताय श्री शांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

ॐ ह्रीं पदार्थस्वरूपसंक्षेपेण प्राप्तज्ञानतत्त्वश्रद्धानस्वरूप-संक्षेप-सम्यग्दर्शनसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

ॐ ह्रीं द्वादशांगज्ञानमवधार्य तत्त्वश्रद्धानस्वरूप-विस्तारसम्यग्दर्शन-प्राप्त्यैषिणे श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

ॐ ह्रीं अंगबाह्यागमाध्ययनमन्तरेण तत्रप्रतिपादितपदार्थनिमित्त-

श्रद्धानस्वरूप-अर्थसम्यग्दर्शनप्राप्त्यैषिणे श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

ॐ ह्रीं अंगांगबाह्यश्रुतावगाहननिमित्तोत्पन्नश्रद्धानस्वरूप-अवगाढ़-सम्यग्दर्शनप्राप्त्यैषिणे श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानेनोत्पन्नसर्वपदार्थसार्थज्ञान श्रद्धानस्वरूपपरमावगाढ सम्यग्दर्शन प्राप्त्यैषिणे श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

—पूर्णार्घ्य (दोहा) —

दशविध समकितरत्न ये, इंद्रों से भी वंद्य।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, पाऊँ सौख्य अखंड।।११।।

ॐ ह्रीं अवगाढ़परमावगाढ़सम्यक्त्वप्राप्त्यैषिणे आज्ञादिसम्यक्त्वगुणमंडिताय श्री शांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

सम्यक्त्व के २५ दोष रहित के २५ अर्घ्य

—दोहा—

प्रशमादिक गुण से सहित, सर्वदोष से शून्य।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य परिपूर्ण।।१।।

अथ मंडलस्योपरि द्वितीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं शंकादोषविरहितनिःशंकितांगसमन्वितसम्यग्दर्शनमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं संसारसुखाकाक्षांदोषविरहित-निःकांक्षितांगसमन्वितसम्यग्दर्शन-मंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

ॐ ह्रीं मुनितनुमलिनग्लानिविरहित निर्विचिकित्सांगधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

ॐ ह्रीं कुत्सितमार्गश्रद्धानविरहितामूढदृष्टि-अंगसमन्वितसम्यग्दर्शनसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गस्थजनदोषोपगूहनस्वरूपोपगूहनांगसमन्वितायसम्यग्दर्शन-धारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वचारित्रस्खलितजनस्थिरीकरणस्वरूपस्थितीकरणांगयुत-सम्यग्दर्शनमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

ॐ ह्रीं सहधर्मिगणवत्सलत्वसहितवात्सल्यांगयुक्तसम्यग्दर्शनधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

ॐ ह्रीं धर्मप्रभावनानिमित्ततपश्चरणरत्नत्रयधारणादिनिमित्तप्रभावनांगयुक्त-सम्यग्दर्शनसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

ॐ ह्रीं ज्ञानमदविरहितसम्यग्दर्शनसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

ॐ ह्रीं पूजामदविरहितसम्यग्दर्शनमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।०।।

ॐ ह्रीं कुलमदविरहितसम्यग्दर्शनधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११।।

ॐ ह्रीं जातिमदविरहितसम्यग्दर्शनमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

ॐ ह्रीं बलमलविरहितसम्यग्दर्शनधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३।।

ॐ ह्रीं ऋद्धिमदविरहितसम्यग्दर्शनसंपन्नाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१४।।

ॐ ह्रीं तपोमदविरहितसम्यग्दर्शनसंप्राप्ताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१५।।

ॐ ह्रीं रूपमदविरहितसम्यग्दर्शनसंप्राप्ताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

ॐ ह्रीं कुदेवानायतनत्यागस्वरूपसम्यग्दर्शनधारकाय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

ॐ ह्रीं कुगुरु अनायतनत्यागस्वरूपसम्यग्दर्शनपालकाय श्रीशांति-सागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

ॐ ह्रीं कुधर्मानायतनत्यागस्वरूप सम्यग्दर्शनप्राप्ताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९।।

ॐ ह्रीं कुदेवसेवकजनानायतनवर्जित-सम्यग्दर्शनसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०।।

ॐ ह्रीं कुगुरुसेवकजनानायतनवर्जित-सम्यग्दर्शनमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१।।

ॐ ह्रीं कुधर्मसेवकानायतनवर्जित-सम्यग्दर्शनमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२।।

ॐ ह्रीं देवमूढ़तादोषवर्जित-शुद्धसम्यग्दर्शनप्राप्ताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३।।

ॐ ह्रीं लोकमूढ़ता दोषवर्जित-शुद्धसम्यग्दर्शनधारकाय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२४।।

ॐ ह्रीं पाखंडिमूढ़तावर्जित-शुद्धसम्यग्दर्शनसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२५।।

—पूर्णार्घ्य-शंभु छंद—

आज्ञा सम्यक्त्व आदि दशविध, सम्यग्दर्शन गुण को धारें।
शंकादिक दोष पचीस कहें, उनसे विरहित शिवपथ धारें।।
निःशंकित आदिक गुण संयुत, आचार्य प्रवर परमेष्ठी हैं।
इनकी पूजा भवदधि तरणी, ये देते सब सुख सिद्धी हैं।।२६।।

ॐ ह्रीं पंचविंशतिदोषविरहितनिर्दोष-सम्यग्दर्शनगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

सम्यग्ज्ञान के ८ अर्घ्य

—दोहा—

समकित होते ही हुआ, सम्यग्ज्ञान अपूर्व।
पुष्पांजलि से पूजते, मिलता ज्ञान अपूर्व।।१।।

अथ मंडलस्योपरि तृतीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं स्वरव्यञ्जनोच्चारणशुद्धिस्वरूप-शब्दशुद्धिसम्यग्ज्ञानधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं सूत्रार्थशुद्धकरणसमर्थ-पूर्वापराविरोधि-अर्थकरणदक्षाय अर्थशुद्धि-समन्वितसम्यग्ज्ञानधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

ॐ ह्रीं शब्दार्थशुद्धिपूर्वकार्थकथनसक्षमाय उभयशुद्धिसंयुत सम्यग्ज्ञान-मंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

ॐ ह्रीं संध्यात्रय-उल्कापाताद्यकालेसिद्धान्तपठन-पाठनवर्जिताय काल-शुद्धिसमन्वितसम्यग्ज्ञानप्राप्ताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

ॐ ह्रीं श्रुतभक्त्यादिपूर्वकविनयकरणसक्षमाय विनयशुद्धिगुणस्वरूप-सम्यग्ज्ञानपरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

ॐ ह्रीं रसपरित्यागादिपूर्वकश्रुताध्ययनकरणाय उपधानशुद्धिस्वरूप-सम्यग्ज्ञानमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

ॐ ह्रीं शास्त्र-शास्त्रकर्तृगुरुजनादरपूजासमन्विताय बहुमानशुद्धिस्वरूप-सम्यग्ज्ञानधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

ॐ ह्रीं ज्ञाननिमित्तशास्त्र-गुरुनामनिह्नवदोषवर्जिताय अनिह्नवशुद्धिसमेत-सम्यग्ज्ञानसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

—पूर्णार्घ्य (दोहा) —

ज्ञान अष्टविध धारते, प्रगटे केवलज्ञान।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं करूँ, स्वात्म सुधारस पान।।९।।

ॐ ह्रीं अष्टविधशुद्धिसमन्वितसम्यग्ज्ञानप्राप्ताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

साधु गुण सहित आचार्य के २८ अर्घ्य

—सोरठा—

द्विविध मोक्षपथ मूल, अट्ठाइस हैं मूलगुण।
धारा भवदधि कूल, साधु कहाये जगप्रथित।।१।।

अथ मंडलस्योपरि चतुर्थ वलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(२८ अर्घ्य)

ॐ ह्रीं कायेन्द्रियगुणस्थान-मार्गणा-कुल-आयुर्योनिप्रभृतिस्थानेषु स्थितजीवानामभयदानदायकाय संसारतारण-तरणसमर्थाय अहिंसामहाव्रत-धारक साधुगुणसमन्विताय प्रथमाचार्याय श्रीशांतिसागरमुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषमोहपैशुन्येर्ष्यादिनिमित्तासत्यवचनपरिहाराय परतापकरसत्य-वचनोक्तिवर्जनाय जिनसूत्रानुसारिसत्यवचनकथन-कुशलाय दिव्यध्वनि-प्राप्तिकारणसमर्थाय सत्यमहाव्रतधारक साधुगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागरमुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

ॐ ह्रीं ग्रामनगरखेटकर्वटमटंबादिषु पतितनष्टविस्मृतस्थापिता-दिस्तोकबहुसूक्ष्मस्थूलादिपरवस्तुत्यागकराय परेषां पुस्तकोपकरण-शास्त्र-शिष्यादिग्रहणविरक्ताय अनन्तगुणप्रापणकुशलाय अचौर्यमहा-व्रतधारक साधुगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यपुंगवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

ॐ ह्रीं सर्वदेवमनुष्यादिस्त्रीषु मातृभगिनीपुत्रीसदृशदृष्टिधारकाय वनिताकोमलालापमृदुस्पर्शरूपालोकननृत्यगीतहासकटाक्षनिरीक्षणा-द्यनुराग-त्यागाय त्रैलोक्यपूज्यब्रह्मचर्यमहाव्रतधारणप्रवण साधुगुण-समन्विताय श्रीशांतिसागरसूरिवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्ववेदक्रोधादिकषायरूपाभ्यन्तरपरिग्रहत्यजनभावना-परिणताय धनधान्यादिबाह्यपरिग्रहत्यागकुशलाय त्रैलोक्यसाम्राज्यपदप्रापण-समर्थाय अपरिग्रहमहाव्रतधारणसमर्थ साधुगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागरमहासाधु-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थयात्रादिप्रयोजननिमित्त चतुर्हस्तभूमि-अवलोकनपूर्वक-गमनागमनकुशलाय मोक्षपथगमनकारणभूताय ईर्यासमितिधारक साधुगुण-समन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

ॐ ह्रीं पैशून्यहास्यकर्कशपरनिन्दात्मप्रशंसाविकथादिवचन-विवर्जिताय वचनसिद्धिकारणभूतस्वपरहितकारिवचनस्वरूपभाषा-समितिधारक-साधुगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यपुंगवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्दोषविरहितकारणसहितनवकोटिविशुद्ध-आहारग्रहणकुशलाय आत्मोत्थपरमानन्दामृतपानकारणभूताय एषणासमिति-परिणतसाधुगुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोपकरण-संयमोपकरण-शौचोपकरणादि-प्रयत्नपूर्वक-आदाननिक्षेपणकुशलाय स्वात्मगुणप्रापणकारणभूताय आदाननिक्षेपणसमिति-स्वरूपसाधुगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपुंगवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

ॐ ह्रीं जीवादिविरहितमर्यादितस्थानोच्चारप्रस्त्रवणादिक्षेपण-कुशलाय स्वात्मशुद्धिकारणभूताय प्रतिष्ठापनासमितिधारकसाधु-गुणविभूषिताय श्रीशांतिसागराचार्यपुंगवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

ॐ ह्रीं कर्कशमृद्वादिस्पर्शेषु रागद्वेषविवर्जिताय स्वात्मतत्त्व-स्पर्शोत्सुकतासहिताय स्पर्शनेन्द्रियनिरोधसाधुगुणसमन्विताय श्रीशांति-सागराचार्यश्रेष्ठाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११।।

ॐ ह्रीं सरससुस्वादुभोजनलालसाविवर्जिताय निर्दोषप्रासुकाहार-ग्रहणकराय साम्यसुधापानोत्सुकाय रसनेन्द्रियविजयसाधुगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

ॐ ह्रीं सुगन्धदुर्गन्धादिवस्तुषु रागद्वेषरहिताय स्वात्मगुण-सुरभिग्रहणोत्सु-काय घ्राणेन्द्रियविजयसाधुगुणभूषिताय श्रीशांतिसागराचार्यधुर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३।।

ॐ ह्रीं प्रशस्ताप्रशस्तरूपाद्यवलोकने साम्यभावपरिणताय जिनेन्द्ररूपाव-लोकनहर्षांकुरिताय चक्षुरिन्द्रियनिरोधव्रतपरिणत-साधुगुणविभूषिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१४।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषोत्पादक शब्दश्रवणनिरूत्सुकाय जिनवचनभक्ति-परिणतशब्दश्रवणोत्सुकाय कर्णेन्द्रियनिरोधव्रतस्वरूपसाधुगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१५।।

ॐ ह्रीं जीवितमरण-लाभालाभ-संयोगवियोग-मित्रशत्रु-सुखदुःखादिषु समताभावसहिताय त्रिकालदेववंदनाविधायकाय समतावश्यक क्रिया-परिणत साधुगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

ॐ ह्रीं ऋषभदेवादितीर्थंकरगुणकीर्तननमस्कारकरणादिस्तवावश्यक-क्रियास्वरूप-साधुगुणमंडिताय स्वात्मगुणविकासकारणभूताय श्रीशांतिसागरा-चार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्यादीनां तत्प्रतिमादीनामपि कृतिकर्म-विधिपूर्वक वंदनाकरणकुशलाय स्वात्मतत्त्वसिद्धिसाधनकराय वंदनावश्यकक्रियापरिणत-साधुगुणप्रवणाय श्रीशांतिसागराचार्यपुंगवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

ॐ ह्रीं द्रव्यक्षेत्रकालभावनिमित्तकृतापराधशोधनकुशलायनिंदनगर्हणयुक्ताय प्रतिक्रमणावश्यकक्रियासहितसाधुगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९।।

ॐ ह्रीं द्रव्यक्षेत्रादिनिमित्त भविष्यत्कालसंबंधिदोषविशोधनकराय प्रत्याख्या-नावश्यकक्रियासहित साधुगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०।।

ॐ ह्रीं दैवसिकादिनियमक्रियासु आगमकथितप्रमाण-श्वासोच्छ्वासकरण-कुशलाय कायममत्वत्यागरूपकायोत्सर्गावश्यक-क्रियासहिताय श्रीशांतिसागराचार्य-वर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१।।

ॐ ह्रीं द्वि-त्रि-चतुर्मासेषु उत्तममध्यमजघन्यरूपेण उपवासपूर्वकं करेण केशोत्पाटनस्वरूपकेशलोचमूलगुणपालनतत्परसाधुगुण-मंडिताय श्रीशांतिसागराचार्य-महामुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२।।

ॐ ह्रीं वस्त्र-चर्म-वल्कल-पत्रादि-भूषणालंकारवर्जिताय निर्ग्रन्थ-दिगम्बरमुद्राधारकाचेलक्यमूलगुणपालनतत्परसाधुगुणविभूषितायश्रीशांतिसागराचार्य-वर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३।।

ॐ ह्रीं स्वेदमलादिव्याप्तसर्वांगमलिनदेहस्नानवर्जिताय संयम-द्विकपालनतत्पर-अस्नानघोरगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यपुंगवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२४।।

ॐ ह्रीं प्रासुकभूमिप्रदेशे साधुपदयोग्यतृणाद्यल्पसंस्तरग्रहण-करणाय क्षितिशयननाममूलगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्य-पुंगवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२५।।

ॐ ह्रीं दंतधावनविवर्जिताय संयमरक्षाकरणकुशलाय अदन्त-धावनमूलगुणपालनकराय श्रीशांतिसागराचार्यपुंगवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२६।।

ॐ ह्रीं उद्भीभूय करपात्रपुटाहारकरणकुशलाय स्थितिभोजननाम-साधुमूलगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२७।।

ॐ ह्रीं सूर्योदयात्त्रिघटिकासूर्यास्तपूर्वात् त्रिघटिकावर्ज्यदिवसे एकबार-भोजनरूपैकभक्तमूलगुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्य-महामुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२८।।

—पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)—

व्रत समिति इन्द्रियवश आवश्यक, ये पंच पंच पण षट् माने।
कचलोच अचेलक अस्नानं, क्षितिशयन अदंतधवन जानो।।
स्थितिभोजन एक भक्त ये सब, अट्ठाइस गुण जो मूल कहें।
इन युत शांतिसागर गुरु को, हम पूजें भवदधि कूल लहें।।२९।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिसाधुपरमेष्ठिमूलगुणसमन्विताय भाक्तिकानां तन्मूल-गुणादानफलप्रदाय श्रीशांतिसागराचार्यमुनीन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

उपाध्याय गुण सहित आचार्य के २५ अर्घ्य

—सोरठा—

तात्कालिक श्रुतज्ञान, पाय स्वात्म अनुभव किया।
स्वपरभेदविज्ञान, हेतु यहाँ पूजा करूँ।।१।।

अथ मंडलस्योपरि पंचमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं आचारांगश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुसततभावनाकुशलाय तात्कालिकमूलाचारादिग्रन्थज्ञानपरिणताय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनासमन्विताय तात्कालिकस्वसमयपरसमयनिरूपकग्रन्थपठननिरताय उपाध्यायपरमेष्ठि-गुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

ॐ ह्रीं स्थानांगश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुसततभावनाभाविताय तात्कालिकैकैककवृद्धिरूप-जीवस्थानज्ञानप्रापकग्रन्थानां स्वाध्यायकरणकुशलाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

ॐ ह्रीं समवायांगश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतु-निरंतरभावनाकरणाय द्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षया सदृशत्वनिरूपक-ग्रन्थपठनकुशलाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिनामांगश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुषष्टिसहस्रप्रश्नोत्तर-दानसमर्थांग-श्रुतज्ञानभावनाकरणकुशलाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यमुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृधर्मकथांगश्रुतज्ञानप्राप्त्यर्थ-तीर्थंकरवर्णितप्रथमानुयोगकथापठन-पाठनकुशलाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यमहामुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनाकरणकुशलाय तात्कालिकरत्नकरण्डश्रावकाचारादिग्रन्थानां पठन-पाठनतत्पराय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

ॐ ह्रीं अन्तकृद्दशांगश्रुतज्ञानलब्धये प्रत्येकतीर्थंकरतीर्थेषु नानाविधोपसर्गविजयिनिर्वाणप्राप्तदश-दशमुनीनां वंदनाकरण-कुशलाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यश्रेष्ठाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरौपपादिकदशांगश्रुतज्ञानप्राप्तये प्रत्येकतीर्थंकरतीर्थेषु घोरोपसर्गविजयि-अनुत्तरेषु जन्मप्राप्तदशदशमुनीनां भक्तिवंदनाकरणप्रवणाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांति-सागराचार्यगुरुवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगश्रुतज्ञानप्राप्तिभावनापरिणताय आक्षेपिणी-विक्षेपिणी-संवेदिनी-निर्वेदिनीकथाप्ररूपकतात्कालिकग्रन्थस्वाध्याय-विधायकाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्य-मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतु-प्रतिदिनभावनाकरणाय तात्कालिककर्मप्रकृति-पुण्यपापफलादिज्ञापककर्मकाण्डादिग्रन्थपठन-पाठनरुचिधराय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्य गुरुदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्त्यर्थं दृष्टिवादांगान्तर्गतपरिकर्मसूत्र-प्रथमानुयोगपूर्वगतचूलिकाभेदरूपश्रुतज्ञानभावनाभाविताय उपाध्याय परमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

ॐ ह्रीं अग्रायणीयपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतु-भावनाकरणाय तात्कालिकतदंशरूपषट्खंडागमग्रन्थोद्धरणप्रेरणादायकाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनाभाविताय आत्मवीर्य-परवीर्यादिवर्णनकरणकुशलाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुण-धारकाय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१४।।

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतु-प्रार्थनाकरणाय अस्तिनास्तिप्रभृतिसप्तभंगीनिरूपकाष्टसहस्त्रीत्यादिग्रन्थेषु श्रुतभक्ति विधायकाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१५।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुप्रार्थनाविधायकाय द्रव्यार्थिकनयाश्रितशुद्धात्मतत्त्व-पर्यायार्थिकनयाश्रिताशुद्धात्म-तत्त्वज्ञायकाय उपाध्याय परमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनाकरणकुशलाय वचनगुप्ति-द्वादशविधभाषा-वचनप्रयोग-वचनसंस्कारादिप्रकार-निरूपकाय उपाध्याय-परमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनाभाविताय शुद्ध-नयाश्रित-शुद्धबुद्धचिच्चैतन्यस्वरूपनिरूपकाय अशुद्धनयाश्रित-कर्मकर्तृ-अशुद्धात्मस्वरूपप्रतिपादकाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनासहिताय कर्मप्रकृति-भेदप्रभेदप्ररूपककर्मसिद्धान्तग्रन्थपठन-पाठननिरताय उपाध्यायपरमेष्ठि-गुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनासहिताय नियतानियत-समयोपवासादिप्रत्याख्यानविधिप्रतिपादकाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्यगुरुदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०।।

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनापरिणताय रोहिणीविद्यादि-अष्टांगनिमित्तादिव्याख्यानप्रतिपादकग्रन्थांश-ज्ञानधारकाय उपाध्यायपरमेष्ठि-गुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१।।

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनाकरणकुशलाय तीर्थंकरपंचकल्याणक-शलाकापुरुषचारित्र-सूर्यादिगतिग्रहणादिप्रतिपादकग्रन्थांशज्ञानपरिणताय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२।।

ॐ ह्रीं प्राणावायपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनाप्रवणाय देहचिकित्सादि-अष्टांगायुर्वेदप्राणायामादिनिरूपकशास्त्रज्ञानांशसहिताय उपाध्यायपरमेष्ठिगुण-मंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यगुरुदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनाकरणाय द्वासप्त-तिपुरुषकला-चतुःषष्टिनारीकला-शिल्पकलादिप्रतिपादकशास्त्रज्ञानपरिणताय उपाध्याय-परमेष्ठिगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपुंगवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२४।।

ॐ ह्रीं लोकविंदुसारपूर्वश्रुतज्ञानप्राप्तिहेतुभावनाकरणप्रवणाय अष्टभेदव्यवहारादि-मोक्षगमनादिक्रियाणामंशमात्रनिरूपकशास्त्रपठन-पाठनकुशलाय उपाध्यायपरमेष्ठिगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यश्रेष्ठाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२५।।

—पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)—

इन ग्यारह अंग पूर्व चौदह, को पढ़ें पढ़ावें शिष्यों को।
या द्वादशांग को भी जानें, या सब तात्कालिक शास्त्रों को।।
इन उपाध्याय के गुण की नित, जो प्राप्ति हेतु इच्छा करते।
तात्कालिक उपाध्याय गुणयुत, उन शांतिसिंधु को हम यजते।।२६।।

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिनां पंचविंशतिगुणपरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय पूर्णार्घ्यं निर्वपीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

आचार्य के ३६ गुणों के ३६ अर्घ्य

—दोहा—

गुण छत्तिस आचार्य के, पालन कर आचार्य।
शान्तिसागराचार्यको, पूजूँ श्रद्धा धार्य।।१।।

अथ मंडलस्योपरि षष्ठवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचार-दर्शनाचार-चारित्राचार-तपश्चरणाचार-वीर्याचारनाम-पंचाचारपालनकुशलाय शिष्याणां पालनकारकाय आचारवत्त्वगुणपरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञान रूपातुल्यसंपत्तिधारणकुशलाय आधारवत्त्व-गुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

ॐ ह्रीं आगमकथितप्रायश्चित्तग्रहणदानकुशलाय स्वपरसर्वदोष-क्षालनसमर्थाय व्यवहारपटुत्वगुणपरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

ॐ ह्रीं समाधिमरणसाधकक्षपकमुनीनां वैयावृत्ति-परिचर्यादि-करणकुशलाय प्रकारकत्वगुणधारणसमर्थाय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

ॐ ह्रीं आलोचनाकरणोद्यतक्षपकमुनीनां गुणदोषज्ञायकाय आयापायदर्शित्वगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

ॐ ह्रीं साधूनां सल्लेखनारतक्षपकानां युक्तिबलपूर्वकं पूर्णतया सर्वदोषनिष्कासनसमर्थाय प्रायश्चित्तादिविधिना शिष्याणां शुद्धिकरण-प्रवणाय उत्पीलनगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

ॐ ह्रीं शिष्याणां गोप्यदोषाप्रकटनकराय अपरिस्त्रवण-गुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

ॐ ह्रीं क्षुधादिपीडितसाधूनां उत्तमकथादि-उपदेशविधिना शांतकरण-प्रवणाय सुखावहगुणनिधानाय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधाहारत्यागस्वरूपोपवासषष्ठाष्टमाद्यनशनतपोगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

ॐ ह्रीं पूर्णोदरभोजनान्यूनैककवलादि-अर्द्धोदरादि आहार-ग्रहणरूपाव-मौदर्यतपोगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

ॐ ह्रीं आहारचर्यासमये वस्तूनां दातृणां वा यत्किमपि नियमं कृत्वा यदाहारग्रहणं तद्वृत्तपरिसंख्याननामतपोगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११।।

ॐ ह्रीं दुग्धदधिघृततैललवण शर्करारूपषट्रसैक-द्वित्र्यादिरसत्यागरूपाय रसर्द्धिकारणस्वरूपाय रसपरित्यागतपोगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

ॐ ह्रीं व्रतभ्रष्ट-गणिका-चांडालादिजनशून्यैकान्तस्थाने शयनासन-करणाय गुरुसंघजिनमंदिरादिषु धर्मध्यानवर्धकस्थानाश्रयकरणाय विवि-क्तशयनासन-तपोगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गासन-पर्यंकासन-वीरासन-उत्कुटिकासनादि-वृक्षमूलातापनाभ्रावकाशादिभिः कायक्लेशतपोगुणधारकाय श्रीशांति-सागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१४।।

ॐ ह्रीं आलोचनाप्रतिक्रमणादिभिः पूर्वकृतापराधनिवारण-कुशलाय प्रायश्चित्तनामाभ्यन्तरतपोगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१५।।

ॐ ह्रीं ज्ञानदर्शनचारित्रतपोविनयोपचारविनयैर्मोक्षप्रासाद-द्वारोद्घाटन-कुशलाय विनयनामाभ्यन्तरतपोऽनुष्ठानकुशलाय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्याय-स्थविरप्रवर्तकगणधरपंचविधसाधुगण-तपस्विशिक्षकव्याध्याक्रान्तरूग्णादिसाधूनां सर्वशक्त्या उपकरणा-हारभैषज्यपुस्तकादिभिर्वैयावृत्यकरणकुशलाय वैयावृत्तिनामाभ्यन्तर-तपोगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

ॐ ह्रीं वाचनापृच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशस्वरूपस्वाध्यायभेदैः स्वात्माध्ययनाध्यापनकरणकुशलाय स्वाध्यायनामाभ्यन्तरतपोगुणविशिष्टाय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

ॐ ह्रीं अभ्यन्तरक्रोधादिपरिग्रह-बाह्यधनधान्यादिपरिग्रहत्यागरूपाय व्युत्सर्गनामाभ्यन्तर तपोगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९।।

ॐ ह्रीं आर्तरौद्रध्यानवर्जितधर्मध्यानपरिणतिसहिताय शुक्ल-ध्यानभावनाभावितायध्याननामाभ्यंतरतपोगुणमंडिताय श्रीशांति-सागराचार्य-वर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०।।

ॐ ह्रीं सम्पूर्णपरिग्रहत्यजनरूपाय तीर्थंकराचरणस्वरूपजिनमुद्रा-समन्विताय आचेलक्यनामस्थितिकल्पगुणधारकाय श्रीशांतिसागरा-चार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१।।

ॐ ह्रीं स्वोद्देश्यनिर्मितभोजनपानादिग्रहणवर्जिताय औद्देशिक-पिंडत्यागनामस्थितिकल्पगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२।।

ॐ ह्रीं मुनिवसतिकानिर्मापक-दायकादिजनैस्तद्दिवसाहारग्रहण-वर्जिताय शय्याधरपिंडत्यागनामस्थितिकल्पगुणमंडिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३।।

ॐ ह्रीं वृषभ-धेनु-महिष-श्वानादिपशुघातादिनिवारणहेतुराज्ञां गृहेषु आहाराग्रहणाय राजकीयपिंडत्यागनामस्थितिकल्पगुणसहिताय श्रीशांतिसागरा-चार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२४।।

ॐ ह्रीं विधिवदावश्यकक्रियादिपालनकरणाय देवगुरूणां विधिवद् भक्त्यावंदनाकरणकुशलाय कृतिकर्मनामस्थितिकल्पगुणसहिताय श्रीशांति-सागराचार्यपुंगवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२५।।

ॐ ह्रीं शिष्याणां व्रतदानप्रवणाय व्रतारोपणयोग्यतानाम-स्थितिकल्प-गुणविभूषिताय श्रीशांतिसागराचार्यधुर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२६।।

ॐ ह्रीं जातिकुलविभवप्रतापकीर्त्यादिषु श्रेष्ठाय ज्ञानचर्याक्रियादिष्वपि सर्वमहते ज्येष्ठतानामस्थितिकल्पगुणविशिष्टाय श्रीशांतिसागराचार्यधुर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२७।।

ॐ ह्रीं स्वपरदोषक्षालनहेतु-सप्तविधप्रतिक्रमण-अनुष्ठानानुष्ठापन-कुशलाय प्रतिक्रमणनामस्थितिकल्पगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यश्रेष्ठाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२८।।

ॐ ह्रीं निर्दोषचर्यापालनममत्त्वपरिहारादिहेतुना ग्रामेषु त्रिदिवसावस्थानाय नगरेषु एकमासपर्यंतावस्थानकरणनियमयुक्ताय मासैकवासितानामस्थितिकल्प-गुणधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यधुर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२९।।

ॐ ह्रीं जलवृष्ट्यादिसहितवर्षाकाले त्रसस्थावरजीवबहुलता शीतवातादि-कारणोद्भूतात्मविराधनाकष्टव्याधि-असंयमादिपरिहारकुशलाय योगनामस्थिति-कल्पगुणसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यधुर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३०।।

ॐ ह्रीं पूजक-प्रशंसक-निंदकघातकादिषु रागद्वेष विवर्जित-परमसमभाव-परिणताय समतावश्यकक्रियानुष्ठानकुशलाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३१।।

ॐ ह्रीं नामस्थापनादिभेदेन तीर्थंकराणां गुणकीर्तनस्तवननमस्कारादि करणकुशलाय स्तवावश्यकक्रियानुष्ठानप्रवणाय श्रीशांति-सागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३२।।

ॐ ह्रीं सिद्धचैत्यपंचगुरुभक्त्यादिपूर्वकदेववंदना-गुरुवंदनादि-करणकुशलाय वंदनावश्यकक्रियानुष्ठानपरिणताय वंद्यवंदकभाववि-रहितस्वात्मतत्त्वचिंतनस्वरूपनिश्चयवंदनाभावनाभाविताय श्रीशांति-सागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३३।।

ॐ ह्रीं मिच्छा मे दुक्कडमित्यादिदण्डकसूत्रोच्चारणपूर्वक-व्यवहार-प्रतिक्रमणकरणाप्रमत्ताय स्वशुद्धपरमात्मतत्त्वलीनतास्वरूपनिश्चय-प्रतिक्रमणप्रतिष्ठापनभावनाहेतुप्रार्थिताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३४।।

ॐ ह्रीं नियतकालचतुर्विधाहारत्यागानुष्ठाननानाविधातिचार-निवारण- हेतु प्रत्याख्यानावश्यकक्रियाविधायकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३५।।

ॐ ह्रीं कायममत्वमुत्सृज्य आगमविहितश्वासोच्छ्वाससहितमहा-मंत्रानुष्ठानकुशलाय कायोत्सर्गावश्यकक्रियाविधानेन धर्म्यशुक्लध्यानसिद्धि-करणोद्यताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३६।।

—पूर्णार्घ्य—

तर्ज- मेरे देश की धरती.....

आचार्य की अर्चा - २, नर जीवन में नव प्रकाश फैलाये।
आचार्य की अर्चा.....।।टेक.।।

बीसवीं सदी के प्रथम आप, आचार्य शिरोमणि कहलाये।
छत्तिस गुण को तुम स्वयं धार, शिष्यों से पालन करवाये।।
इसलिए तुम्हारी पूजा कर, हम रत्नत्रय निधि पायें।।
आचार्य की अर्चा.....।।१।।

सारे भारत के नर नारी, तुमको आचार्य श्रेष्ठ मानें।
जो वर्तमान में साधूगण, वे तुमको सर्वोत्तम मानें।।
इसलिए तुम्हारी पूजा को हम, भक्ति भाव से आये।।
आचार्य की अर्चा.....।।२।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशदाचार्यगुणसमन्विताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं.....।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

२२ परीषहजय के २२ अर्घ्य

—दोहा—

बाईस परिषह के जयी, ज्ञान ध्यान में लीन।
पुष्पांजलि से जजत ही, मिले सौख्य स्वाधीन।।१।।
अथ मंडलस्योपरि सप्तमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं आहारालाभे सति क्षुधाजन्यबाधाप्राप्तखेदविरहिताय क्षुत्परीषह-विजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं पित्तप्रकोपादिनोत्पन्नपिपासाबाधासमाधिजलेन शांतकरणकुशलाय पिपासापरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।२।।

ॐ ह्रीं आवरणवस्त्रादिविरहितशीतपवनतुषारादि शीतपरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।३।।

ॐ ह्रीं ग्रीष्मकालीनसूर्यसंतप्तबाधास्वरूप-उष्णपरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।४।।

ॐ ह्रीं दंशमशक-व्रश्चिक-सर्पादिकृतबाधास्वरूप-दंशमशकपरीषह-विजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।५।।

ॐ ह्रीं नग्नमुद्रायामखण्डब्रह्मचर्यधारकनिर्विकारस्वरूपनग्नपरीषह-विजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।६।।

ॐ ह्रीं शून्यस्थानगुफादिमनोविरुद्धस्थलेषु अरुचिविरहित-अरतिपरीषह-विजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।७।।

ॐ ह्रीं स्त्रीभिर्विभ्रमादिनाबाधायां सत्यामपि निश्चलमनःस्वरूप-स्त्री-परीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।८।।

ॐ ह्रीं प्रस्तरादिभिर्दुर्गममार्गेषु चलत्सु खेदविरहितचर्यापरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।९।।

ॐ ह्रीं नियतकालादिनोपवेशने सति कष्टसहनसक्षमनिषद्यापरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।१०।।

ॐ ह्रीं दुर्गमस्थलेषु शयनसमये कष्टसहनसक्षम-शय्यापरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।११।।

ॐ ह्रीं अज्ञानिजनकृतनिंद्य-असभ्यवचनश्रवणादिषु क्रोधविरहित-आक्रोशपरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।१२।।

ॐ ह्रीं मूढजनकृततीक्ष्णशस्त्रादिप्रहारबाधाकृते सति क्षमाभावसमन्वित-बधपरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।१३।।

ॐ ह्रीं शरीरशुष्कजाते सत्यपि आहारौषधादियाचनाविरहित-याचनापरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।१४।।

ॐ ह्रीं चिरकालाहारालाभे सत्यपि 'लाभादलाभोवरं' इति चिन्त्यद्-अलाभपरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।१५।।

ॐ ह्रीं नानाविधरोगेष्वपि औषधोपचारापेक्षावर्जित-रोगपरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।१६।।

ॐ ह्रीं तृणकठोरपाषाणादिबाधासहनसक्षमप्राणिपीडापरिहाररुचिधारक-तृणस्पर्श-परीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।१७।।

ॐ ह्रीं स्नानत्यागव्रतेन मलालिप्तगात्रे दद्रूकद्रूपीडादिसहनदक्ष-मलपरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।१८।।

ॐ ह्रीं महातपस्वि-सिद्धान्तवित् निर्दोषचारित्रधारके सत्यपि जनताकृत-सत्कारादिविरहितकालेऽपि खेदविरहित-सत्कारपुरस्कारपरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।१९।।

ॐ ह्रीं उत्तमज्ञानधारके सत्यपि विद्या-बुद्धिमदविरहितप्रज्ञापरीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।२०।।

ॐ ह्रीं 'अयं मूढ' इति परकृतापमाने सत्यपि खेदविरहित अज्ञानपरीषह-विजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।२१।।

ॐ ह्रीं देवादिभिरतिशयकरणविरहितेऽपि दृढ़श्रद्धानसमन्वित अदर्शन-परीषहविजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।।२२।।

—पूर्णार्घ्य (चौबोल छंद) —

क्षुधा तृषादिक परिषह सहकर, तनु से निर्मम हुए प्रभो!
स्वात्मतत्त्व के चिन्तन में नित, साम्य सुधारस पिया प्रभो!।।
जल चंदन अक्षत आदिक ले, अर्घ्य चढ़ाकर नित्य जजूँ।
सर्व परीषह विजयी बनकर, चिदानन्द सुख शीघ्र भजूँ।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशतिपरीषहविजयिने विंशतिशताब्दौ प्रथमाचार्यवर्यश्रीशांतिसागरमुनीन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

सत्तावन आस्त्रव विरहित एवं ५ विशिष्ट गुण सहित के ६२ अर्घ्य

—दोहा—

आस्त्रव भेद असंख्य, फिर भी सत्तावन कहे।
इनको दूर करंत, पुष्प चढ़ा उनको जजूँ।।१।।

अथ मंडलस्योपरि अष्टमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं अनेकान्तात्मकवस्तुतत्त्वश्रद्धानप्राप्ताय एकान्तमिथ्यात्वविरहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

ॐ ह्रीं यथावद्वस्तुश्रद्धानसमन्विताय विपरीतमिथ्यात्ववर्जिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

ॐ ह्रीं जिनागमकथितदेवशास्त्रगुरुविनयधारकाय विनयमिथ्यात्व-विवर्जिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवकथितपदार्थविषयकदृढ़श्रद्धानधारकाय संशयमिथ्या-त्वविरहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

ॐ ह्रीं समीचीनज्ञानप्राप्ताय अज्ञानमिथ्यात्ववर्जिताय श्रीशांतिसागराचार्य-परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

ॐ ह्रीं दयाधर्मपालनतत्पराय पृथ्वीकायिकजीवविराधनात्यागाय श्रीशांति-सागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रतसमन्विताय जलकायिकजीवपीडात्यागाय श्रीशांति-सागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

ॐ ह्रीं जीवदयापालनकारकाय अग्निकायिकजीवबाधाविरहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

ॐ ह्रीं परमाहिंसाधर्मधारकाय वायुकायिकजीवोपघातविरहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

ॐ ह्रीं तुच्छयोनिप्राप्तभीताय वनस्पतिकायिक जीवबाधानिवारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

ॐ ह्रीं विकलेन्द्रियादिगतिषु गमनभीरवे त्रसकायिकजीववधत्यागाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११।।

ॐ ह्रीं मृदुकठिनशीतोष्णादिस्पर्शेषु साम्यभावधारकाय स्पर्शनेन्द्रिया-विरतित्यागाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

ॐ ह्रीं मधुरतिक्तादिषु समताभावप्राप्ताय रसनेन्द्रियाविरतित्यागाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३।।

ॐ ह्रीं सुगंधदुर्गंधादिषु समभावप्राप्ताय घ्राणेन्द्रियाविरतिविरताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१४।।

ॐ ह्रीं चेतनाचेतनशुभाशुभरूपेषु समताभावप्राप्ताय चक्षुरिन्द्रिया-विरतित्यागाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१५।।

ॐ ह्रीं शुभाशुभशब्दवर्णश्रवणेषु साम्यभावधारकाय कर्णेन्द्रियाविरतित्यागाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

ॐ ह्रीं एकाग्रचिन्तानिरोधध्यानभावनापरिणताय मनोनोइंद्रिय विजयिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

ॐ ह्रीं अनंतसंसारकारणमिथ्यात्वसहचारिक्रोधकषायविरहिताय अनन्ता-नुबंधिक्रोधत्यागाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१८।।

ॐ ह्रीं परमानंदसौख्यस्वाभिमानप्राप्ताय अनन्तानुबंधिमानकषायविरहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१९।।

ॐ ह्रीं पंचमऋजुगतिप्राप्त्यैषिणे अनन्तानुबंधिमायाकषायविवर्जिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२०।।

ॐ ह्रीं स्वात्मोत्थसौख्यप्राप्त्यैषिणे अनन्तानुबंधिलोभकषायविरहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२१।।

ॐ ह्रीं देशव्रतघातिकषायोपशांताय अप्रत्याख्यानावरणक्रोधकषायत्यागाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२२।।

ॐ ह्रीं अणुव्रतादिषुप्रीतिकारकाय अप्रत्याख्यानावरणमानकषायविरहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२३।।

ॐ ह्रीं सरलप्रकृतिधारकाय अप्रत्याख्यानावरणमायाकषायविवर्जिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२४।।

ॐ ह्रीं स्वात्मतत्त्वलोभप्राप्ताय अप्रत्याख्यानावरणलोभकषायशून्याय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२५।।

ॐ ह्रीं सकलचारित्रघातककषायशून्याय प्रत्याख्यानावरणक्रोध-कषायविवर्जिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२६।।

ॐ मानापमानादिषु साम्यसुधारसप्राप्ताय प्रत्याख्यानावरणमान-कषायविवर्जिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२७।।

ॐ ह्रीं सरलतामूर्तिस्वरूपाय प्रत्याख्यानावरणमायाकषायविवर्जिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२८।।

ॐ ह्रीं परवस्तुषु लालसाविरहिताय प्रत्याख्यानावरणलोभकषायशून्याय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२९।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातचारित्रप्राप्त्यैषिणे संज्वलनक्रोधकषायसहिताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३०।।

ॐ ह्रीं पूर्णचारित्रप्राप्त्यैषिणे संज्वलनमानकषाय कृशीकरणभावनापरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३१।।

ॐ ह्रीं सकलचारित्रपरिणताय संज्वलनमायाकषायकृशीकरण-भावनाभाविताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३२।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातपरमचारित्रप्राप्त्यैषिणे संज्वलनलोभकषायधारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३३।।

ॐ ह्रीं मंदमुस्कानसहितमुखकमलविकसिताय सर्वभव्यजनमनःप्रसन्न-कारकाय हास्यनोकषायमंदकरणसक्षमाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३४।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियविषयकरागविवर्जिताय स्वात्मरतिभावपरिणताय रतिनो-कषायकृशीकरणसक्षमाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३५।।

ॐ ह्रीं सर्वपरद्रव्येषु अरुचिप्राप्ताय अरतिनोकषायजनितास्त्रवविरताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३६।।

ॐ ह्रीं परवस्तुचिन्ताविगताय शोकनोकषायजनितास्त्रवविरताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३७।।

ॐ ह्रीं सप्तभयविरहिताय भयनोकषायजनितास्त्रववर्जनकराय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३८।।

ॐ ह्रीं मलिनवस्तुषु जुगुप्सावर्जिताय जुगुप्सानोकषायजनितास्त्रवविदूराय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३९।।

ॐ ह्रीं मातृस्वसृपुत्रीवत्सर्वस्त्रीषु भावकशाय स्त्रीवेदनोकषायजनितास्त्रवविगताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४०।।

ॐ ह्रीं नग्नदिगम्बरमुद्राधारणसमर्थाय पुंवेदनोकषायजनितास्त्रवकृशीकरण-भावनाभाविताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४१।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वप्रभावेन नपुंसकवेदेजन्मधारणवर्जितायनपुंसकवेदनोकषाय-जनितास्त्रवनिवारणभावनापरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४२।।

ॐ ह्रीं निर्विकल्पध्यानप्राप्तिकारणभूताय सत्यमहाव्रातधारकाय सत्यमनोयोगजनितास्त्रवनिवारणभावनापरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४३।।

ॐ ह्रीं असत्यमनश्चिन्तनरहिताय असत्यमनोयोगजनितास्त्रवनिवारकाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४४।।

ॐ ह्रीं असत्यमनोवृत्तिनिवारणभावनासहिताय सत्यमृषामनोयोगजनितास्त्रव-निवारणभावनापरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४५।।

ॐ ह्रीं अनुभयमनोयोगपरिणताय असत्यमृषामनोयोगजनितास्त्रव-निवारणभावनापरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४६।।

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतनिर्दोषपालनपरायणाय सत्यवचनयोगजनितास्त्रवरहित-भावनाभाविताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४७।।

ॐ ह्रीं असत्यवचनविरहिताय असत्यवचनयोगजनितास्त्रवनिराकरण-समर्थाय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४८।।

ॐ ह्रीं सत्यधर्मपालनतत्पराय सत्यमृषावचनयोगजनितास्त्रवनिरोध-परमसंवरभावनाभाविताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४९।।

ॐ ह्रीं अनुभयवचनयोग्यसयोगिकेवलिपदप्राप्त्यैषिणे असत्यमृषा वचनयोगजनितास्त्रवविरहितपदप्राप्त्यैषिणे श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५०।।

ॐ ह्रीं मोक्षपदप्रापणकारणभूतौदारिकशरीरसार्थककराय औदारिक-काययोगजनितास्त्रवनिरोधिपरमसंवरभावनापरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५१।।

ॐ ह्रीं शरीरधारणकारणविरहितपदप्राप्त्यैषिणे औदारिकमिश्रकाययोग-जनितास्त्रवनिरोधिपरमसंवरभावनापरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५२।।

ॐ ह्रीं अशुभविक्रियावर्जितयोगभावनाभाविताय वैक्रियिककाययोगजनितास्त्रव-निरोधिपरमसंवरप्राप्त्यैषिणे श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५३।।

ॐ ह्रीं देवनारकगतिविरहितपदप्राप्त्यैषिणे वैक्रियिकमिश्रयोगजनितास्त्रव-निरोधिपरमसंवरभावनाभाविताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५४।।

ॐ ह्रीं आहारकर्द्धिप्राप्तिकारणभूतोत्कृष्टसंयमधारकाय आहारकयोग-जनितास्त्रवनिरोधिपरमसंवरभावनापरिणताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५५।।

ॐ ह्रीं परमनिर्विकल्पावस्थाप्राप्तिकारणभावनाभाविताय आहारकमिश्र-काययोगजनितास्त्रवनिरोधिपरमसंवरप्राप्त्यैषिणे श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५६।।

ॐ ह्रीं संसारकारणमूलभूतकार्मणशरीरविरहितपदप्राप्त्यैषिणे कार्मण-काययोगजनितास्त्रवनिरोधिपरमसंवरभावनाभाविताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५७।।

—पूर्णार्घ्य—

गुरुदेव! तुम्हारे चरणों में, हम शीश झुकाने आये हैं।
आठों द्रव्यों को ला करके, हम अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
बहु मूलोत्तरगुण के धारी, गुरु नग्न दिगम्बर अविकारी।
जो आत्मसाधना कर शिवपद, पाते वे धन्य कहाते हैं।।

ॐ ह्रीं सप्तपंचाशदास्त्रवनिरोधिसंवरभावनाभाविताय श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पाँच विशेष गुण के ५ अर्घ्य

ॐ ह्रीं ग्रीष्मकाले पर्वतचूलिकाया उपरि स्थित्वा स्वात्मध्यान-करणभावनासमन्विताय आतापनयोगप्रार्थिताय श्रीशांतिसागराचार्य-गुरुदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५८।।

ॐ ह्रीं वर्षाकाले वृक्षाणां-मूलेषु स्थित्वा ध्यानकरणकुशलवृक्षमूलयोग-भावनापरिणताय तत्कालीननानाविधपरीषहसहनकुशलाय श्रीशांतिसागराचार्य-गुरुपुंगवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५९।।

ॐ ह्रीं शीतकाले नदीनां तटेषु चतुष्पथादिस्थलेषु शुद्धात्म-ध्यानोत्सुकाय अभ्रावकाशयोगप्रार्थिताय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६०।।

ॐ ह्रीं नवकोटिविशुद्धब्रह्मस्वरूपात्मचर्यानिमग्नब्रह्मचर्य-पालनपराय अष्टादशसहस्त्रशीलगुणपरिपूर्णताहेतुभावनाकरणाय श्रीशांतिसागराचार्य-गुरुवर्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६१।।

ॐ ह्रीं मूलोत्तरगुणधारणसाधनबलेन नानाविधपरीषहोपसर्ग-सहनकरण-भावनापरिणताय चतुरशीतिलक्षगुणपरिपूर्णताहेतुनिरंतर-जिनवरचरणकमलेषु प्रार्थनाकरणतत्पराय गुरूणां गुरुवे श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६२।।

— पूर्णार्घ्य —

तर्ज - आओ बच्चों तुम्हें दिखायें.....

शान्तिसागराचार्यवर्यगुरु! तुम पद पूजा नित्य करें।
सम्यग्दर्शनज्ञानचरित से, निज जीवन को शुद्ध करें।।
वंदे सूरिवरं - ४।।टेक.।।

अट्ठाईस मूलगुणधारी, साधु कहाये जग भर में।
उपाध्याय के पच्चिस गुणयुत, सबको शिक्षा दी सच में।।
भक्तिभाव से नित्य नमें हम, निज जीवन को शुद्ध करें।
शान्तिसागराचार्यवर्यगुरु! तुम पद पूजा नित्य करें।
वंदे सूरिवरं - ४।।१।।

छत्तिस गुण आचार्यप्रवर के, धारण कर आचार्य बने।
तुमसे भी दीक्षा धारण कर, शिष्य बहुत आचार्य बने।।
इसीलिए तुम चरण जजें हम, निज जीवन को शुद्ध करें।।
शान्तिसागराचार्यवर्यगुरु! तुम पद पूजा नित्य करें।
वंदे सूरिवरं - ४।।२।।

आतापन आदिक योगों का, तुमने नित अभ्यास किया।
सर्व शीलगुण पालन हेतू, नित्य ध्यान अभ्यास किया।।
इसीलिए पूर्णार्घ्य चढ़ाकर, निज जीवन को शुद्ध करें।
शान्तिसागराचार्यवर्यगुरु! तुम पद पूजा नित्य करें।
वंदे सूरिवरं - ४।।३।।

षट्खंडागम महाबंध, आदिक शास्त्रों की भक्ति किया।
ताम्रपत्र पर उत्कीरण, करवा कर स्थायित्व किया।।
सम्यग्ज्ञानमती होवे मम, निज जीवन को शुद्ध करें।।
शान्तिसागराचार्यवर्यगुरु! तुम पद पूजा नित्य करें।
वंदे सूरिवरं - ४।।४।।

ॐ ह्रीं सप्तपंचाशदास्रवनिरोधिसंवरभावनापरिणताय आतापनवृक्षमूलाभ्रावकाश-योगाष्टादशसहस्रशीलचतुरशीतिलक्षगुणप्राप्तिहेतुसततभावनाकरणाय श्रीशांतिसागराचार्यवर्याय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य* —ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यपरमेष्ठिने नमः।**

जयमाला

— दोहा —

शांतिसागराचार्यगुरु,मोक्षमार्ग के रूप।
गाऊँ गुणमाला अबे, पाऊँ स्वात्म स्वरूप।।१।।

जय जय आचार्य शांतिसागर, अठबीस साधु गुण से मंडित।
जय जय चारित्र चक्रवर्ती, पाठक के पच्चिस गुण अन्वित।।
बीसवीं सदी के आप प्रथम, आचार्य दिगंबर हुए प्रथित।
शिष्यों का संग्रह किया अनुग्रह-निग्रह गुण से भी संयुत।।२।।

नाना विध तपश्चरण करके, अद्भुत महिमा पायी जग में।
इस युग में यद्यपि ऋद्धि न हों, फिर भी कुछ अंश दिखा तुममें।।
बहुतेक भव्य तुम भक्ती से, नाना विध कष्ट निवारे थे।
तुम चरणोदक मस्तक धरकर, कुष्ठादि रोग भी टारे थे।।३।।

सर्पादिक के उपसर्गों को, धीरज से सहन किया तुमने।
उपसर्ग आदि करने वाले, दुष्टों को क्षमा किया तुमने।।
पैंतिस वर्षों तक मुनी रहे, बहुविध उपवास किये तुमने।
साढ़े पचीस वर्षों की जो, गणना गायी विद्वत्गण ने।।४।।

चारित्र शुद्धिव्रत-बारह सौ, चौंतिस उपवास किये तुमने।
पुनरपि तीस चौबीसी व्रत, जो सात शतक बीस गिनने।।
शुभ कर्मदहनव्रत तीन बार, करके कर्मों को क्षीण किया।
तीर्थंकर प्रकृतिकारण षोडश-कारण व्रत[1] सोलह बार किया।।५।।

अति घोर सिंहनिष्क्रीडितव्रत, विधिवत् गुरु ने त्रयबार किये।
दशलक्षण आष्टान्हिक व्रत भी, उपवास विधी से पूर्ण किये।।
गुरुवर के सब नव हजार तीन सौ-अड़तिस दिन उपवासों में।
फिर भी शरीर में शक्ती थी, तुम कायबली सम थे जग में।।६।।

चारों अनुयोगों को पढ़कर, निज मनुज जन्म का सार लिया।
फिर समयसार पढ़कर आत्मा को, समयसारमय बना लिया।।
वर ग्रन्थ भगवती आराधन, छत्तीस बार पढ़कर तुमने।
स्वातम आराधन कर अंतिम, सुसमाधिमरण पाया तुमने।।७।।

1. षोडशकारण के एक साथ 16 उपवास ऐसे सोलह बार किया।

इस दुषमकाल में हीन संहनन, धारी नर नारी मानें।
उनमें से एक आप ही तो, उत्तम शक्ती युत सब जानें।।
तीर्थों की तीर्थकरों की भी, भक्ती अतिशायी दिखलायी।
जिनआगम की भक्ती से तो, आगम भी हुआ अति स्थायी।।८।।

गुरुओं की भक्ती स्वयं किया, बहुते गुरुवों का सृजन किया।
इन देव शास्त्र गुरु भक्ती से, निज का रत्नत्रय शुद्ध किया।।
हे शांतिसागराचार्य वर्य! मैं नमूँ सहस्त्रों बार नमूँ।
चारित्रचक्रवर्तिन् गुरुवर! मैं निज रत्नत्रय हेतु नमूँ।।९।।

गुरु भक्ती से सम्यक्त्वरत्न, निर्दोष सुरक्षित अविचल हो।
गुरु भक्ती से सज्ज्ञानरत्न, निजभासे नित वृद्धिंगत हो।।
गुरु भक्ती से चारित्ररत्न, अंतिम क्षण तक मुझ साथ रहे।
गुरुभक्ती से तप आराधन, करने में उत्सुक चित्त रहे।।१०।।

हे गुरुवर! तव प्रसाद से ही, श्रीवीरसागराचार्य मिले।
जिनके प्रसाद से रत्नत्रय का, लाभ मिला गुण पुष्प खिले।।
तब तक मन में गुरुभक्ति रहे, जब तक नहिं आत्मा सिद्ध बने।
कैवल्य 'ज्ञानमति' पाने तक, गुरुभक्ती भवदधि नाव बने।।११।।

—दोहा—

त्रिभुवन के भी पूज्य गुरु, जिनमुद्रा से वंद्य!
नमूँ नमूँ नत शीश कर, पाऊं परमानंद।।१२।।

ॐ ह्रीं चारित्रचक्रवर्तिने श्रीशांतिसागराचार्यमहामुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

—गीताछंद—

जो भव्यजन श्री शांतिसागरसूरि की अर्चा करें।
वे शांतिप्रद चारित्रगुण से, स्वात्म की चर्चा करें।।
सम्यक्त्व ज्ञान चरित्र से निज, आत्मनिधि प्रगटित करें।
सज्ज्ञानमति रविकिरण से, अज्ञानतम विघटित करें।।१।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

❖❖❖❖❖❖

प्रशस्ति

श्री महावीर तीर्थंकर को मैं, भक्तिभाव से नित्य नमूँ।
इस वर्तमान में जिनका वर-शासन प्रसिद्ध उनको प्रणमूँ।।
श्री सरस्वती माँ को वँदूं, जिनके प्रसाद से ज्ञान मिला।
गणधर गुरुओं को भी प्रणमूँ, गुरुभक्ती से मन कमल खिला।।१।।

श्री मूलसंघ में कुंदकुंद-आम्नाय सरस्वति गच्छ कहा।
विख्यात बलात्कार गण से, गुरु आम्नायों में मुख्य रहा।।
इसमें अगणित आचार्य हुए, उन सबको वंदन मेरा है।।
सब परम्परा आचार्यों को, नितप्रति अभिवंदन मेरा है।।२।।

चारित्र चक्रवर्ती प्रधान, आचार्य शांतिसागर माने।
उनको जन्में इक सौ बत्तीस, वर्ष हो गए सब जानें।।
आषाढ़ वदी छठ जन्म दिवस, यह जग में मंगलकारी हो।
आचार्य शांतिसागर पूजा-विधान सब जन मनहारी हो।।३।।

महावीर जन्मभूमी कुण्डलपुर में विधान यह पूर्ण किया।
तब ब्रह्मचारिणी बहनों ने, मंडल पूजन कर भक्ति किया।।
श्री पंचपरम परमेष्ठी में, आचार्य एक परमेष्ठी हैं।
इनका विधान, इनकी पूजा, जो करते सम्यग्दृष्टी हैं।।४।।

इन गुरु के पहले पट्टशिष्य, श्री वीरसागराचार्य प्रवर।
ये दीक्षागुरुवर मेरे हैं, इनका यश सदा रहे भू पर।।
मुझ अज्ञमती को ज्ञानमती, कर दिया आर्यिका व्रत देकर।
गंभीर-धीर-मितभाषी गुरु, मैं नमूँ नमूँ नित अंजलि कर।।५।।

जब तक कुण्डलपुर तीर्थ रहे, पावापुर तीर्थ रहे भू पर।
तब तक 'शांतीसागर विधान' सब करें करावें भव्यप्रवर।।
श्रीशांतिसागराचार्यवर्य की, परम्परा अक्षुण्ण रहे।
है कोटि कोटि वंदन मेरा, मुझ 'ज्ञानमती' अक्षुण्ण रहे।।६।।

इति श्री शांतिसागर पूजा-विधान प्रशस्ति समाप्ता।

भजन

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज- चल दिया छोड़.....

श्री शांतिसिंधु मुनिराज, जगत सरताज, प्रथम ऋषिराजा
युग के मुनि मार्ग विधाता।।
थे भोजग्राम के राजकुंवर।
माँ सत्यवती के पुत्रप्रवर।।
जन्मे जग के कल्याण हेतु सुखदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।१।।
जैसे रवि तिमिर भगाता है।
जग में प्रकाश फैलाता है।
यूं ही मिथ्यात्व तिमिर नाशक गुरु गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।२।।
मुनि के दर्शन जब दुर्लभ थे।
देवेन्द्र कीर्ति इक गुरुवर थे।।
वे बने शांतिसागर मुनि के निर्माता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।३।।
मुनिचर्या तब जीवन्त हुई।
जिनवाणी सार्थक सिद्ध हुई।।
कलियुग भी सत्पुरुषों का जन्म प्रदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।४।।
है वर्तमान गौरवशाली।
उस एक वृक्ष की ही डाली।।
फल फूल रही वंशावलि गौरव गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।५।।
आचार्य प्रथम वे मान्य हुए।
युग में सबसे प्राधान्य हुए।।
उत्कृष्ट समाधीमरण से जोड़ा नाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।६।।
हम भी परोक्ष यशगान करें।
गुरुवर का मन में ध्यान करें।।
''चन्दनामती'' वन्दना करें नत माथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।७।।

भजन

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-तेरी दुनिया से दूर.....

गुरुवर शान्तीसागर, थे इस युग के रत्नाकर, उन्हें याद रखना।। टेक.।।
सुनते हैं जो इनकी, मुनिचर्या की कहानी, रोमाँच होता है।
रोमाँच होता है, मन में भान होता है।
उनके जैसा त्यागी, तपस्वी कोई मुनिवर, न प्राप्त होता है।
न प्राप्त होता है, न प्राप्त होता है।
थे वे ज्ञान के भण्डार, उनमें शांति थी अपार, उन्हें याद रखना।।१।।
बीसवीं सदी के, चारित्र चक्रवर्ती, श्री शान्तिसागर जी,
श्री शान्तिसागर जी, गुरुवर शान्तिसागर जी
मुनिपथ प्रदर्शक, आचार्य प्रथम थे वे, चउसंघ नायक जी,
चउसंघ नायक जी, गुरुवर मूलनायक जी।।
थे दश धर्मों के भण्डार, उनमें धैर्य था अपार, उन्हें याद रखना।।२।।
भादों सुदी दुतिया को, पुण्यतिथि उनकी, मनाते हैं सभी,
मनाते हैं सभी, उनको ध्याते हैं सभी।
उनकी स्मृतियों के, दर्पण में निज को, सजाते हैं सभी,
सजाते हैं सभी, निज को ध्याते हैं सभी।।
उनकी यादों का संसार, ''चन्दनामती'' भण्डार, उन्हें याद रखना।।३।।

❖❖❖❖❖❖

आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की आरती

रचयित्री—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

धुन- नागिन.....

जय जय गुरुवर, हे सूरीश्वर, श्री शान्तिसिन्धु मुनिराज की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।
जग में महापुरुष युग का, परिवर्तन करने आते।
अपनी त्याग तपस्या से वे, नवजीवन भर जाते।।
गुरू जी नवजीवन.....
जग धन्य हुआ, तव जन्म हुआ, मुनि परम्परा साकार की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।१।।
कलियुग में साक्षात् मोक्ष की, परम्परा नहिं मानी।
फिर भी शिव का मार्ग खुला है, जिस पर चलते ज्ञानी।।
गुरू जी जिस पर.....
मुनि पद पाया, पथ दिखलाया, चर्या पाली जिननाथ की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।२।।
मुनि देवेन्द्रकीर्ति गुरुवर से, दीक्षा तुमने पाई।
भोज ग्राम माँ सत्यवती की, कीर्तिप्रभा फैलाई।।
गुरू जी कीर्तिप्रभा.....
हे शान्तिसिन्धु, हे विश्ववन्द्य, तव महिमा अपरम्पार थी
मैं आज उतारूँ आरतिया।।३।।
परमेष्ठी आचार्य प्रथम तुम, इस युग के कहलाए।
सदियों सोई मानवता को, आप जगाने आए।।
गुरू जी आप.....
तपमूर्ति बने, कटुकर्म हने, उत्तम समाधि भी प्राप्त की,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।४।।
श्री चारित्रचक्रवर्ती के, चरणों में वन्दन है।
अहिविष भी ''चन्दनामती'', तव पास बना चन्दन है।।
गुरू जी.....
भव पार करो, कल्याण करो, मिल जावे बोधि समाधि भी,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।५।।

विधान के मंडल का नक्शा

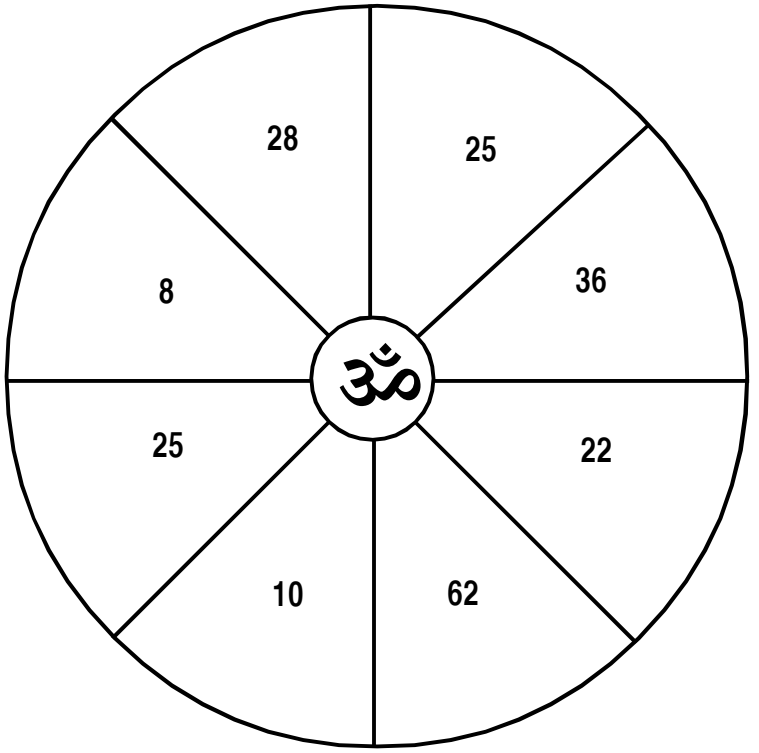

कुल 216 अर्घ्य